Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Preliminary & Main)

भाग - 2

आधुनिक भारत एवं छत्तीसगढ़ इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

CGPSC

CONTENTS

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपियों का आगमन 1
2. ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार 4
   - बंगाल 5
   - मैसूर 8
   - पंजाब 14
   - अवध 15
3. ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियां 16
4. ब्रिटिश आर्थिक नीतियां 19
5. ब्रिटिश भू–राजस्व नीति 21
6. ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियाँ 38
7. ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियाँ 44
8. ब्रिटिश शिक्षा नीतियाँ 48
9. भारतीय प्रतिक्रिया 51
   - जनजातिय विद्रोह 53
   - किसान विद्रोह 54
   - 1857 का विद्रोह 59
10. सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन 64
   - राजा राममोहन राय 66
   - आर्य समाज एवं दयानंद सरस्वती 68
   - स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन 69
11. मुस्लिम सुधार आंदोलन 72

12. राष्ट्रीय आंदोलन 75
- उदारवादी आंदोलन 79
- उग्रवादी आंदोलन 81
- बंगाल का विभाजन 83
- स्वदेशी आंदोलन 85
- क्रांतिकारी आंदोलन 88
- गाँधी आंदोलन 92
- खिलाफत आंदोलन 96
- असहयोग आंदोलन 98
- सविनय अवज्ञा आंदोलन 104
- भारत छोडो आंदोलन 111

13. 1945 के बाद भारत 114

छत्तीसगढ़ का इतिहास

1. छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास 136
2. मध्यकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास 151
3. बस्तर का इतिहास 154
4. आधुनिकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास 159
5. छत्तीसगढ़ जनजातीय विद्रोह 168
6. छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन 171
7. छत्तीसगढ़ का जंगल सत्याग्रह 175
8. छत्तीसगढ़ के 36 गढ़ और रियासतें 179

यूरोपियों का आगमन

आगमन

- पुर्तगाली
- डच
- अंग्रेज
- डेनिश
- फ्रांसीसी

पुर्तगाली :-

1. भारत में सर्वप्रथम आने वाले यूरोपियों में पुर्तगाली थे । उन्होंने मसाला व्यापार को ध्यान में रखते हुए भारत में प्रवेश किया और विभिन्न स्थानों पर उत्पादन फैक्ट्री/कारखाने/बस्ती/किले की स्थापना की । यह कारखाने उत्पादन के केन्द्र नहीं थे बल्कि भण्डारग्रह थे । यहाँ पर वस्तुओं का संग्रह कर उन्हे यूरोप भेजा जाता था । यह फैक्ट्री किलाबन्द क्षेत्र जैसी होती थी, जिसमें गोदाम, कार्यालय तथा व्यापारियों के लिये आवास भी होते थे । पुर्तगालियों ने कारखाना निर्माण की इस पद्धति को इटली के व्यापारियों से प्राप्त किया ।

2. पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा 1498 में सर्वप्रथम भारत के पश्चिमी तट कालीकट से आया जहाँ हिन्दू शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया जबकि वहाँ मौजूद अरबी व्यापारियों ने विरोध किया और विरोध का कारण आर्थिक था ।

3. भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस डी. अल्मीडा थे जिसने ब्लू वाटर पॉलिसी (नीला पानी नीति) अर्थात् शांतिपूर्वक व्यापार की नीति बनाई ।

4. पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क ने भारत में पुर्तगाली पुरूषों को भारतीय स्त्रियों के साथ विवाह के लिये प्रोत्साहित किया जिससे कि भारत में पुर्तगाली बस्ती की स्थापना को मजबूत आधार मिल सके। अल्बुकर्क को भारत में वास्तविक शक्ति का संस्थापक भी कहा जाता है ।

5. 1661 में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय के साथ पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह हुआ और उपहार स्वरूप ब्रिटिश राजकुमार को बॉम्बे प्राप्त हुआ जिसने आगे चलकर 1668 में बॉम्बे ब्रिटिश कंपनी को दे दिया ।

प्रश्न :- ब्रिटिश कम्पनी को बॉम्बे प्राप्त हुआ

अ. पुर्तगालियों से ✓ब. ब्रिटिश से

स. डच से द. मराठों से

पुर्तगालियों का योगदान :-

1. भारत में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की ।
2. तम्बाकू की खेती का प्रचलन शुरू किया ।
3. यूरोपीय गौथिक स्थापत्य (मीनारों का नुकीलापन) का भारत में प्रवेश हुआ ।

पतन का कारण :-

1. पुर्तगालियों की ईसाईकरण की नीति ने असंतोष पैदा किया। फलतः उन्हें स्थानीय सहयोग प्राप्त नहीं हुआ।
2. व्यापार के साथ उन्होंने लूटपाट की नीति जारी रखी। अतः विरोधी पैदा हुए। वस्तुतः पुर्तगालियों ने कार्टेज-आर्मेडा-काफिला पद्धति की शुरूआत की जिसके तहत समुद्री व्यापार के लिए जहाजों को पुर्तगालियों से परमिट प्राप्त करना होता था। इसे न लेने वाले को दण्डित करते हुए उसके समुद्री जहाज को लूट लिया जाता था।

डच (नीदरलैण्ड/हालैण्ड)[1602]:-

1. 1602 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई। इसके देखरेख के लिए 17 सदस्यीय बोर्ड का गठन किया गया। डच सरकार का कंपनी पर नियंत्रण था और कम्पनी के द्वारा की जाने वाली संधियाँ डच सरकार के नाम से की जाती थी। डच कंपनी को युद्ध करने, संधि करने एवं क्षेत्र विस्तार करने की शक्ति सरकार द्वारा प्रदान की गई।
2. डचों ने बाटविया (इण्डोनेशिया) में अपना मुख्यालय बनाया। भारत स्थित डच कंपनी इसी केन्द्र के प्रति उत्तरदायी थी।
3. डचों ने मसालों के स्थान पर भारतीय वस्त्र के निर्यात को ज्यादा महत्व दिया। इसी तरह भारत से भारतीय वस्तुओं में वस्त्र के निर्यात को सर्वप्रमुख वस्तु बनाने का श्रेय डचों को दिया जाता है। डचों ने कोरोमण्डल तट से व्यापार को प्रमुखता दी।
4. अन्ततः 1759 में बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को पराजित किया।

डेनिश कंपनी (डेनमार्क)[1616] :-

डेनिश कंपनी डेनमार्क की कंपनी थी जिसकी स्थापना 1616 ई. में हुई। इसने ट्रँकोबार (तमिलनाडु) में अपना पहला व्यापारिक केन्द्र बनाया और आगे चलकर अपने सभी केन्द्रों को ब्रिटिश को बेचकर चले गए।

ब्रिटिश कंपनी :-

1. 1588 में अंग्रेजों ने अपनी नौसैनिक श्रेष्ठता प्रमाणित कर पूर्वी क्षेत्र में व्यापार हेतु कदम बढाया। इसी क्रम में 1599 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई जिसे आरंभ में 15 वर्षों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करने की अनुमति दी गई। आगे चलकर 1609 में सम्राट जेम्स प्रथम ने एक व्यापारिक एकाधिकार को अनिश्चित काल के लिए बढा दिया।
2. 1608 में जहाँगीर के शासन काल में कैप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में अंग्रेजों के दल ने सूरत में प्रथम व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की और इसके लिए शासक की अनुमति लेनी चाही जो उस समय नहीं मिली। अतः 1613 में सर थॉमस रो के नेतृत्व में आए ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल को मुगल शासक जहाँगीर द्वारा स्थायी बस्ती निर्माण की अनुमति दी गई। इस तरह सूरत में अंग्रेजों की प्रथम स्थायी बस्ती की स्थापना हुई। (जबकि 1611 में ही दक्षिण भारत में मसूलीपट्टनम में अंग्रेजों ने अपनी प्रथम बस्ती की स्थापना की थी।)
3. 1698 में बंगाली सूबेदार अजीम उहशान ने अंग्रेजों को सुतानती, गोविन्दपुर, कलकत्ता की जमींदारी प्रदान की इन्ही स्थानों को मिलाकर जॉब चरनॉक ने फोर्ट विलियम कलकत्ता की स्थापना की जिसका प्रथम प्रेसीडेंट चार्ल्स आयर था।
4. 1717 ई. में मुगल बादशाह फर्रुखशियर ने अंग्रेजों को शाही फरमान प्रदान किया जिसके तहत उन्हें बंगाल में निःशुल्क व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गई।

फ्रांसीसी कंपनी :-

1- 1664 में लुई 14 के समय वित्तमंत्री को कोल्बर्ट के प्रयासों से फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई । फ्रांसीसी कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार और वित्तीय संसाधन प्राप्त थे। यह पूर्णतः सरकारी कंपनी थी ।

2. 1668 में फ्रांसीसी कैरो के नेतृत्व में प्रथम फ्रांसीसी दल भारत आया और सूरत में व्यापारिक केंद्र की स्थापना की । भारत मे प्रथम फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले था ।

3. अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के मध्य तीन युद्ध हुए जिन्हे कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है । इस युद्ध के दौरान 1760 में अंग्रेजों ने बाडीवाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को पराजित किया ।

4. राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया ।

फ्रांसीसियों की पराजय का कारण :-

1. फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः एक सरकारी कंपनी थी । इस कारण निर्णय लेने मे विलंब होता था ।
2. फ्रांसीसी अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव था ।
3. फ्रांसीसियों की नौ सैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी ।
4. ब्रिटिश कंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ । यही कारण है कि ब्रिटिश के साथ संघर्ष में फ्रांसीसी पराजित हुए ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार

मुगल साम्राज्य– बंगाल

(औरंगजेब) सूबेदार ↓ दीवान ↓ (मुर्शिद कुली खाँ)

राज परिवार की व्यक्ति

अजीमशा (1698) (प्रायः दिल्ली में रहता था)

वंशानुगत शासन– मुर्शिद कुली खाँ

↓

नबाब

↓

अलीवर्दी खाँ

↓

सिराजुद्दौला

बंगाल

मुर्शिद कुली खाँ :-

1. यह औरंगजेब द्वारा 1700 ई. में बंगाल का दीवान बनाया गया। इस समय बंगाल का सूबेदार अजीमुशान था जो राजदरबार से संबंधित होने के कारण प्रायः दिल्ली दरबार में रहता था। अतः बंगाल में वास्तविक शक्ति मुर्शीद कुली खाँ के पास थी।
2. मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने 1717 में मुर्शिद कुली खाँ को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया था। यह मुगल बादशाह द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम सूबेदार था। इसी के साथ बंगाल में वंशानुगत शासन की शुरूआत हुई।

मुर्शिद कुली खाँ के राजस्व सुधारः-

1. इसने छोटे जमीदारों के विरूद्ध कार्यवाही की।
2. जागीर भूमि का एक बडा हिस्सा खालिसा भूमि (राजकीय भूमि) में परिवर्तित कर दिया।
3. इसने बडे जमीदारों को सहयोग दिया जो राजस्व वसूली एवं भुगतान की जिम्मेदारी लेते थे। अतः उनकी जागीर को बनाए रखा।
4. किसानों को ऋण की सुविधा (तकावी) उपलब्ध कराया।
   मुर्शिद कुली खाँ के सुधारों से नाराज होकर गुलाम मोहम्मद, उदयनारायण आदि जमीदारों ने विद्रोह किया। इन विद्रोहों का दमन कर मुर्शिद कुली खाँ ने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद बनाई।

अलीवर्दी खाँ :-

इसने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खी से की और कहा कि यदि इन्हें छेडा न जाए तो ये शहद देगी और छेडने पर काट-काट कर मार डालेगी।

सिराजुद्दौला :-

1. नवाब बनने के साथ ही सिराजुद्दौला को अपने संबंधियों से संघर्ष करना पडा। अंग्रेजो ने इस संघर्ष से लाभ उठाने के लिए नवाब के विरोधियों को शरण दी और नवाब की अनुमति के बिना ही किलेबंदी शुरू कर दी। अतः सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए। कलकत्ता पर हमला किया और जून 1756 ई. में फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लिया। इस संदर्भ मे ब्रिटिश अधिकारी हॉलवेल ने ब्लैक होल काण्ड का उल्लेख किया। (146 अंग्रेज बंदियों को नवाब ने एक छोटे कमरे में कैद किया उसमें से अगले दिन केवल 23 जिंदा बचे।)
2. अंग्रेजों ने कलकता पर पुनः नियत्रंण के लिए क्लाइव के नेतृत्व में एक सेना भेजी और कलकत्ता पर पुनः आधिकार कर लिया। अब क्लाइव ने नवाब के अधिकारियों को अपने पक्ष में करना शुरू किया जिसमें प्रमुख (मीर बख्शी, सैन्य प्रमुख), मणिकचंद (कलकता का प्रभारी), अमीनचंद (पूंज़ीपति), जगतसेठ (बैंकर) थे।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757) :-

1. प्लासी बंगाल के नादिया जिले के भागीरथी तट पर अवस्थित है। इस युद्ध में अंगेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया। षड्यंत्र के कारण नबाव की सेना पराजित हुई और सिराजुद्दौला को युद्ध मैदान से भागना पडा। नबाव की ओर से मीर मदन एवं मोहन लाल जैसे सैन्य अधिकारियों ने वफादारी दिखाई और अब बंगाल का नवाब मीर जाफर को बनाया गया।

मीर जाफर (1757-1760) :-

इसने नवाबी प्राप्त करने के पश्चात कंपनी को 24 परगना क्षेत्र की जमीदारी दी किंतु मीर जाफर अंग्रेजों की मांग से तंग आकर डचों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध कार्यवाही की योजना बनाई परंतु इसका भेद खुल गया । अतः 1759 मे बेदारा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को पराजित किया और मीर कासिम को नवाब बनाया ।

मीर कासिम (1760-63) :-

मीर जाफर के पश्चात अंग्रेजों ने मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया । इससे अंग्रेजों को बर्दवान, मिर्जापुर, चटगांव क्षेत्र की जमीदारी प्राप्त हुई। साथ ही कुछ उपहार के रूप में धन सम्पदा की प्राप्ति हुई । इस आधार पर वेंसिटार्ट ने इस सत्ता परिवर्तन को क्रांति की संज्ञा दी ।

किंतु यह वास्तव में क्रांति नहीं थी क्योंकि इस सत्ता परिवर्तन में बंगाल की जनता की कोई भूमिका नहीं थी और न ही इस सत्ता परिवर्तन के पश्चात व्यवस्था में कोई व्यापक परिवर्तन आया । वस्तुतः सत्ता पहले भी अंग्रेजों के द्वारा बनाए गए कठपुतली नवाब के पास थी और अब भी एक दूसरी कठपुतली नवाब के पास रही । यह दृष्टि से भी क्रांति नहीं कही जा सकती क्योंकि मीर कासिम से ही ब्रिटिश के आर्थिक हितो को चोट पहुँची और अन्ततः उसे ब्रिटिश के साथ युद्ध करना पडा ।

निष्कर्षः-

निष्कर्षः हम कह सकते है कि 1760 ई. में बंगाल मे हुआ सत्ता परिवर्तन न तो बंगाल की जनता के लिए और न ही ब्रिटिश के लिए क्रांति का सूचक था ।

प्रश्न :- "1760 मे बंगाल में एक क्रांति हुई ।" समीक्षा कीजिए । (200 शब्द)

उत्तर :-

1. कथन का संदर्भः- मीर जाफर को गद्दी से हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब अंग्रेजों द्वारा बनाया गया । मीर कासिम से अंग्रेजों को बर्दमान, मिदनापुर, चटगांव की जागीर एवं उपहार स्वरूप धनराशि मिली । इस आधार पर इस सत्ता परिवर्तन को क्रांति कहा गया ।
2. समीक्षा :-
    1. बंगाल की जनता की कोई भूमिका नहीं रही ।
    2. शासन संरचना में कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ ।
    3. मीर कासिम से अंग्रेजों का टकराव हुआ ।
3. निष्कर्षः-

मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुंगेर बनाई और अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित करना शुरू किया । वस्तुतः मीर कासिम नवाब की वास्तविक शक्ति का उपयोग करना चाह रहा था । इसी क्रम मे मीर कासिम ने अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे दस्तक के दुरूपयोग को रोकने के लिए अपने राज्य से चुंगी की समाप्ति कर दी । इससे अंग्रेजों के आर्थिक हितों को चोट पहुँची अतः अंग्रेजों के साथ उसका संघर्ष हुआ । अन्ततः मीर कासिम को भागकर अवध के नवाब के यहाँ शरण लेनी पडी। अब नवाब पुनः मीर जाफर को बनाया गया ।

मीर जाफर (1763-65) :-

मीर जाफर के समय बक्सर का युद्ध हुआ । इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व हैक्टर मुनरो ने किया, तो दूसरी तरफ अवध का नवाब शुजाउद्दौला मुगल बादशाह आलम 2 एवं बंगाल का अपदस्थ नवाब मीर कासिम था । युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई और तत्-पश्चात उन्होने पराजित शक्तियों से इलाहाबाद की संधि कर ली ।

नजमुद्दौला (1765-66) :-

मीर जाफर की मृत्यु के पश्चात् नजमुद्दौला को नवाब बनाया गया । इसी के समय इलाहाबाद की संधि हुई और इस संधि के लिए लंदन से क्लाइव को बुलाया गया ।

इलाहाबाद की संधि (1765) :-

अंग्रेजों + मुगल बादशाह + अवध का नवाब + बंगाल का नवाब

↓ ↓ ↓ ↓

क्लाइव   शाह आलम 2   शुजाउद्दौला   नजमुद्दौला

1. इस संधि के तहत अंग्रेजों ने मुगल सम्राट से बंगाल, बिहार, उडीसा की दीवानी प्राप्त की तथा वित्तीय/राजस्व अधिकार प्राप्त किए ।
2. मुगल सम्राट को ब्रिटिश कंपनी रू. 26 लाख पैंशन देगी किन्तु यह धनराशि बंगाल के नवाब पर आरोपित की गई ।
3. अवध के नवाब से संधि कर उससे इलाहाबाद एवं कडा का क्षेत्र लेकर मुगल सम्राट को दे दिया गया और अवध नवाब पर युद्ध हर्जाने के रूप मे रू. 50 लाख आरोपित किये गए ।
4. अवध को अंग्रेजो ने आश्वासन दिया कि अगर कोई शक्ति अवध पर आक्रमण करती है, तो अंग्रेज अवध की सहायता करेंगे जिसका खर्च अवध का नवाब उठाएगा ।

इस संधि से अंग्रेज वैध शासक बन गए । अब बंगाल का राजस्व प्राप्त करने के लिए भारत के मुगल सम्राट द्वारा अधिकृत हो गए। इस तरह बक्सर के युद्ध परिणाम ने अंग्रेजों को वैधता प्रदान की, जहाँ से उन्होंने भारत विजय की प्रक्रिया आरंभ की और धन की लूट को एक संस्थागत रूप दिया इसलिए बक्सर के युद्ध को एक निर्णायक युद्ध भी कहा जाता है ।

द्वैध शासन (1765-72) :-

बंगाल

↙ ↘

नवाब   अंग्रेज

↓   ↓

प्रशासनिक अधिकार   वित्तीय/दीवानी अधिकार

बंगाल में क्लाइव ने नवाब नजमुद्दौला के समय 1765 में द्वैध शासन लागू किया । इस व्यवस्था के तहत् दीवानी अधिकार तो कंपनी के पास रहा किंतु प्रशासनिक उत्तरदायित्व नवाब के पास रहा जो अंग्रेजों पर ही निर्भर था । इस प्रकार एक ही प्रांत पर दो शक्तियों का शासन मौजूद था । अंग्रेजों के पास वास्तविक शक्ति थी जबकि नवाब के पास उत्तरदायित्व था ।

द्वैध शासन क्यों लागू किया गया/उत्तरदायी कारकः-

1. अंग्रेजों द्वारा बंगाल की जनता पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करने से उन्हें भारतीय असंतोष का सामना करना पड सकता था, जिससे उनके आर्थिक लाभ बाधित होते। अतः आर्थिक लाभ लेने के लिए द्वैध शासन को अपनाया गया ।
2. प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश का भी भय था । वस्तुतः उन्हें कर देने से बचने के लिए द्वैध शासन लागू किया गया ।
3. प्रशासनिक कठिनाइयों से बचने के लिए क्लाइव ने यह नीति लागू की ।
4. क्लाइव यदि बंगाल की सत्ता अपने हाथ में ले लेता। तो ब्रिटिश संसद कंपनी के कार्यो में हस्तक्षेप करते हुए उस पर कठोर नियंत्रण लगा सकती थी ।

परिणाम :-

1. कंपनी के अधिकारियों में दायित्वहीनता का विकास हुआ । फलतः कानून व्यवस्था कमजोर हुई, जिससे अव्यवस्था फैली ।
2. मनमाने तरीके से राजस्व वसूली से कृषकों की स्थिति दयनीय हुई और कृषि का ह्रास हुआ ।
3. किसानों के शोषण में वृद्धि हुई । फलतः उत्पादन में कमी आई । इससे अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।
4. कंपनी के कर्मचारी निजी व्यापार पर अधिक बल देने लगे । अतः कंपनी के व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पडा । अन्ततः 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने द्वैध शासन की समप्ति कर बंगाल पर ब्रिटिश सत्ता स्थापित की ।

मैसूर

विजयनगर साम्राज्य
↓
औडयार वंश
↓
चिक्का कृष्णराज

देवराज (सेनापति)

नंदराज (वित्तमंत्री)
↓
हैदर अली (सैनिक)
↓
1761 में शासक

(1780-1781) ब्रिटिश के लिए संकट का वर्ष
(1) मैसूर-मराठा-निजाम के त्रिगुट
(2) बंगाल एवं बाम्बे के ब्रिटिश अधिकारियों में मतभेद

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69) :-

1761 में हैदर अली मैसूर का शासक बना और उसने फ्रांसीसियों से अपना संबंध बनाया तथा ब्रिटिश विरोधी नीति अपनायी । फलतः अंग्रेजों के साथ उसका संघर्ष हुआ, जो मद्रास की संधि से समाप्त हुआ ।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84) :-

1. 1771 ई. में जब मराठों ने मैसूर पर हमला किया, तो अंग्रेजों ने मैसूर की सहायता नहीं की । अतः पहले की गई मद्रास की संधि का उल्लंघन हुआ । फलतः आंग्ल मैसूर संबंध तनावपूर्ण हुए ।
2. अमेरिकी क्रांति के दौरान अमेरिका के साथ फ्रांस भी था और दोनों मिलकर ब्रिटिश के विरूद्ध सैन्य अभियान कर रहे थे । इस तरह ब्रिटिश फ्रांसीसी संबंध संघर्षपूर्ण थे । ऐसे भारत में भी स्थित दोनों कंपनियों के बीच तनाव बढा । इसी क्रम में ब्रिटिश ने फ्रांसीसी बस्ती माहे पर नियंत्रण करना चाहा, जो हैदर के क्षेत्र में स्थित थी । अतः आंग्ल मैसूर युद्ध शुरू हुआ ।
3. इस युद्ध में मैसूर, निजाम और मराठों का त्रिगुट अंग्रेजों के विरूद्ध बना । इस तरह 1780-81 का वर्ष ब्रिटिश के लिए सर्वाधिक संकट का वर्ष अर्थात राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति ब्रिटिश के प्रतिकूल थी । वस्तुतः इस समय भारत में मराठों के साथ भी अंग्रेजों का युद्ध चल रहा था तो साथ ही बाम्बे एवं बंगाल के ब्रिटिश अधिकारियों के बीच मतभेद व्याप्त थे, तो दूसरी तरफ अमेरिकी स्वंतत्रता संग्राम के परिणामस्परूप अमेरिका, ब्रिटिश के हाथों से आजाद हो रहा था और इसी क्रम में फ्रांस, हालैण्ड और स्पेन के साथ भी ब्रिटेन का संघर्ष चल रहा था । इस तरह भारतीय और अंतराष्ट्रीय दोनों ही परिस्थितियाँ अंग्रेजों के प्रतिकूल थी किन्तु भारत में मौजूद वारेन हेस्टिंग्स ने कुशलता से इस संकट का समाधान निकाला तथा निजाम और मराठों को अपने पक्ष में किया । वस्तुतः मराठों के साथ सालबाई की संधि कर उसे युद्ध से अलग किया। अन्ततः हैदर को युद्ध में पराजित कर टीपू के साथ 1784 मंगलौर की संधि करते हुए युद्ध को समाप्त किया ।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92) :-

1. इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल कार्नवालिस था। टीपू सुल्तान फ्रांसीसियों से संबंध बनाऐ हुए था । फलतः अंग्रेजों के साथ तनाव पैदा हुआ, तो दूसरी तरफ कार्नवालिस ने मित्र राज्यों की सूची मे मैसूर को शामिल नहीं किया । अतः दोनों के बीच तनाव बढा । इसी तरह त्रावणकोर राज्य पर टीपू ने हमला किया, जो ब्रिटिश का संरक्षित राज्य था । अतः मैसूर और अंग्रजों के बीच युद्ध शुरू हो गया ।
2. इस युद्ध में अंग्रेज-निजाम और मराठों का त्रिगुट मैसूर के विरूद्ध बना। युद्ध में टीपू पराजित हुआ और 1792 मे श्रीरंगपट्टम की संधि करनी पडी । इस संधि के तहत टीपू का आधा राज्य अंग्रेजों को प्राप्त हुआ। युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप मे एक बडी धनराशि टीपू पर आरोपित की गई। इस और टीपू के दो पुत्र अंग्रेजों के पास बंधक रखे गए । इस तरह मैसूर की शक्ति को कमजोर कर दिया गया। इसी संदर्भ में कार्नवालिस ने कहा कि हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाऐ बगैर अपने शत्रु को पंगु बना दिया। वस्तुतः यदि कार्नवालिस द्वारा मैसूर राज्य का पूर्ण विलय कर लिया जाता, तो उसके अधिक क्षेत्रों को अपने युद्धकालीन मित्रों निजाम और मराठों को दोनों को देना पडता जिससे वे शक्ति संपन्न हो सकते थे और ब्रिटिश के लिए चुनौती प्रस्तुत करते । अतः इस चुनौती से बचने के लिए कार्नवालिस ने टीपू के साथ संधि की और उसका आधा राज्य प्राप्त किया और उसे कमजोर बना दिया । इस दृष्टि से श्रीरंगपट्टम की संधि एक दूरदर्शिता पूर्ण कदम थी ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799) :-

इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली था । इस समय टीपू फ्रांसीसियों से संबंध बनाए हुए था, तो दूसरी तरफ यूरोप में नेपोलियन से मिस्र का अभियान कर रहा था । अतः अंग्रेजों को अपने भारतीय उपनिवेश की सुरक्षा की चिंता हुई। ऐसे में वेलेजली ने फ्रांस से संबंध रखने वाली भारतीय शक्ति को समाप्त करना चाहा । इसी क्रम में वेलेजली ने मैसूर पर हमला कर टीपू को समाप्त किया और मैसूर के बडे क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया। मैसूर के छोटे से क्षेत्र पर पुराने ओडयार वंश के दो वर्षीय शासक को सत्ता सौंपी और उससे सहायक संधि कर ली । इस विजय के पश्चात वेलेजली ने कहा कि पूर्व का साम्राज्य हमारे कदमों में है ।

टीपू सुल्तान :-

1. टीपू ने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान जन्में क्रांतिकारी समूह जैकोबियन क्लब की सदस्यता ली और अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया। टीपू ने अपने सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति से युक्त किया।
2. टीपू भारत का प्रथम शासक था जो आर्थिक शक्ति को सैनिक शक्ति का आधार मानता था । अतः टीपू ने यूरोपियों के समान ही व्यापारिक कंपनी के निर्माण की बात कही । उसने विभिन्न देशो मे अपने दूत भेजे और उनसे व्यापारिक संबंध बनाने का प्रयास किया ।
3. टीपू ने कहा कि भेड की तरह लम्बी जिन्दगी जीने के बजाए, शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है।

शिवाजी (1627-80)

पुत्र

शाहूजी (1680-89) → पुत्र → साहूजी (कैदखाने में)

राजाराम (1689-1700) → पत्नी → (ताराबाई)

1707-49 तक छत्रपति

मराठा राज्य

स्वराज क्षेत्र (प्रत्यक्ष नियंत्रण) → छत्रपति को सरदेशमुखी कर प्राप्त होता था।

मुल्क-ए-कदीम पडोसी क्षेत्र

देशमुख-पद/भू-स्वामी का

देशमुखों का प्रधान-सरदेशमुख (छत्रपति)

मुल्क-ए कदीम
↓
यहाँ मराठा सेना अभियान करते थे।
↓
मराठा आक्रमण से बचने के लिए पडोसी राज्य चौथ देते थे

चौथ का बँटवारा विभिन्न मराठा सरदारों में होता था
(छत्रपति के पास सीमित अंश पहुँचता था)

छत्तीसगढ़ का इतिहास

छत्तीसगढ़ इतिहास की महत्वपूर्ण तिथियाँ

600 - 200 ई. पू.	- बौद्ध मौर्यकालीन छत्तीसगढ़
200 - 60 ई. पू.	- सातवाहन युग
400 - 600 ई.	- गुप्त वाकाटकों का आधिपत्य
600–1200 ई.	- पूर्व मध्ययुगीन छत्तीसगढ़
400–1100 ई.	- नल वंश
1075 ई.	- कल्चुरी शासन, रतनपुर
1095 ई.	- जाजल्लदेव रतनपुर का राजा बना
1127 ई.	- रत्नदेव द्वितीय रतनपुर का राजा बना
1167 ई.	- मल्हार शिलालेख
1213 ई.	- प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र पेंड्राबांध से
1216 ई.	- प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र कोनरी से
1217 ई.	- प्रतापमल्ल राजा से संबन्धित ताम्रपत्र
1369 ई.	- कल्चुरी शासन खल्लरी में
1410 ई.	- रायपुर में कल्चुरी शासन
1415 ई.	- देवपाल मोंची ने नारायण पाल का मंदिर बनवाया
1420 ई.	- केशव देव राजा के काल का खिताब - सीता बल्दी का युद्ध
1479 ई.	- 'छत्तीसगढ़' शब्द का प्रयोग, कवि दलराम राव द्वारा
1513 ई.	- कोंसगई के दो शिलालेख प्राप्त हुए
1672 ई.	- कुतुबशाह ने 1672 ई. तक शासन किया
1741 ई.	- छत्तीसगढ़ पर मराठा भास्कर पंत का आक्रमण
1746 ई.	- खूब तमाशा की रचना
1756 ई.	- संत गुरुघासीदास का जन्म गिरौदपुरी (रायपुर)
1758 ई.	- रघुजी भोंसले के पुत्र बिंबाजी छत्तीसगढ़ के प्रशासक नियुक्त हुए

1758-87 ई.	- बिंबाजी भोंसले का शासन
1777-79 ई.	- बस्तर की हल्बा क्रांति
1777-1800 ई.	- दरिया देव मराठा भोंसलों के अधीन काकतीय राजा
1779 ई.	- महाप्रभु वल्लभाचार्य का जन्म
1818-80 ई.	- छत्तीसगढ में ब्रिटिश संरक्षणधीन मराठा शासन
1826 ई.	- ब्रिटिश - भोंसला संधि
1827 ई.	- संबल नरेश महाराज साथ की मृत्यु
1829 ई.	- ब्रिटिश - भोंसला दूसरी संधि
1830 ई.	- राजनांदगाँव कपडा मिल की स्थापना
1842-53 ई.	- दरिया देव भोंसले के अधीन काकतीय राजा
1853 ई.	- रघुजी तृतीय की मृत्यु
1830-54 ई.	- छत्तीसगढ में पुनः भोंसले शासन
1854 ई.	- छत्तीसगढ समेत नागपुर राज्य का ब्रिटिश साम्राज्य मे विलय
1855 ई.	- छत्तीसगढ का प्रथम डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स सी. इलियट बने, नागपुर रुपए का चलन समाप्त, ब्रिटिश रुपया का चलना आरंभ।
1856 ई.	- सोनाखान का विद्रोह, भीषण अकाल, वीरनारायन सिंह द्वारा, कसडोल के एक व्यापारी, माखन के गोदाम का अनाज लूटकर भूखी प्रजा में बाँटना
1857 ई.	- विद्रोह के दौरान वीर नारायण सिंह को फांसी दी गयी।
10 दिसंबर 1875 ई.	- रायपुर जयस्तंभ चौक पर वीर नारायण सिंह मृत्युदंड। छत्तीसगढ के प्रथम शहीद हुए।
1876 ई.	- मुरिया विद्रोह
1939 ई.	- बरदाटौला जंगल सत्याग्रह
1945 ई.	- बलौदा बाजार में किसान को - ओपरेटिव राईस मिल
1947 ई.	- छत्तीसगढ में स्वतन्त्रता दीवाल मनाया गया
1948 ई.	- रियासतों का भारतीय संघ में विलय
1951 ई.	- 'महाकौशल' दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रथम प्रारम्भ

1956 ई.	– छत्तीसगढ महासभा का गठन डा. खूबचन्द बघेल द्वारा छत्तीसगढ म. प्र. का भाग बना
1958 ई.	– इन्दिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ की स्थापना
1963 ई.	– रायपुर आकाशवाणी केंद्र की स्थापना (छत्तीसगढ में प्रथम)
1964 ई.	– प. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर की स्थापना
1994 ई.	– म. प्र. विधानसभा द्वारा पृथक छत्तीसगढ की माँग पर संकल्प पारित
1998 ई.	– 9 जिलों का गठन
25 जुलाई 2000 ई.	– 25 जुलाई को लोकसभा मे म. प्र. पुनर्गठन विधेयक प्रस्तुत
31 जुलाई 2000 ई.	– लोकसभा मे म. प्र. पुनर्गठन विधेयक 2000 पारित
9 अगस्त 2000 ई.	– राज्यसभा मे म. प्र. पुनर्गठन 2000 पारित
28 अगस्त 2000 ई.	– राष्ट्रपति द्वारा म. प्र. पुनर्गठन विधेयक 2000 अनुमोदित
1 नवंबर 2000 ई.	– 26वाँ राज्य छत्तीसगढ की स्थापना
15 अगस्त 2001 ई.	– सरगुजा पुलिस रेंज की स्थापना
2002 ई.	– छत्तीसगढ में कमिश्नर प्रणाली समाप्त
26 जनवरी 2011 ई.	– 108 संजीवनी सेवा प्रारम्भ
जनवरी 2011 ई.	– महतारी योजना प्रारम्भ
15 अगस्त 2011 ई.	– 9 नए जिलों की घोषणा
09 जनवरी 2012 ई.	– 9 नए जिलों की स्थापना
21 अप्रैल 2012 ई.	– कलेक्टर, अलेक्सपाल मेनन का नक्सलियों द्वारा अपरहण
मई 2012 ई.	– कलेक्टर अलेक्स पाल मेनन रिहा
25 जुलाई 2012 ई.	– जर्दा गुटखा की बिक्री पर प्रतिबंध
26 जुलाई 2012 ई.	– छत्तीसगढ का प्रथम ई . ग्रंथालय अम्बिकापुर (सरगुजा) में स्थापित

मध्यकालीन छत्तीसगढ का इतिहास

1. कलचुरी वंश (रतनपुर और रायपुर शाखा)
2. फणी नागवंश (कार्वधा)
3. सोम वंश (कांकेर)
4. छिंद्रक नागवंश (बस्तर)
5. काकतीय वंश (बस्तर)

❖ कलचुरी वंश (1000 – 1741 ई.)

- संस्थापक – कलिंगराज
- प्रमुख शासक

1. कलिंगराज (1000 – 1020 ई.)
   - राजधानी – तुम्माण
   - चौतुरगढ के महामाया मंदिर का निर्माण कराया।

2. कमल राज (1020 – 1045 ई.)
3. रत्न देव (1045 – 1065 ई.)
   - 1050 में रतनपुर शहर बसाया व उसे राजधानी बनाया।
   - महामाया मंदिर का निर्माण करवाया।
   - रतनपुर में अनेक मंदिर व तालाब का निर्माण करवाया।
   - रतनपुर को कुबेरपुर भी कहा जाता है।

4. पृथ्वीदेव प्रथम
   - उपाधि – सकलकोशलाधिपती
   - तुम्माण का पृथ्वीदेवेश्वर मंदिर का निर्माण
   - रतनपुर का विशाल तालाब
   - तुम्माण में बंकेश्वर मंदिर में स्थित मंडप का निर्माण करवाया था।

5. जाजल्लदेव (1095 – 1120 ई.)
   - गजशार्दुल की उपाधि धारण की।
   - अपने सिक्के में अंकित कराया।
   - जांजगीर शहर बसाया।
   - पाली के शिव मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।
   - जगतपाल का सेनापति था।
   - छिंद्रक नागवंशी शासक सोमेश्वर को हराया।

6. <u>रत्न द्वितीय (*1120 – 1135 ई.*)</u>
    - अनंतवर्मन चोड़गंग (पुरी के मंदिर का निर्माण करवाया था) को शिवरीनारायण के समीप युद्ध में हराया।
7. <u>जाजल्लदेव द्वितीय (*1165 – 1168 ई.*)</u>
8. <u>जगतदेव (*1168 – 1178 ई.*)</u>
9. <u>रत्न देव तृतीय (*1178 – 1198 ई.*)</u>
10. <u>प्रताप मल्ल (*1198 – 1222 ई.*)</u>
    - कलचुरियों का अंधकार युग कहलाता है।
11. <u>बहरेंद्र साथ (*1480 – 1525 ई.*)</u>
    - कोसगई माता का मंदिर बनवाया।
12. <u>कल्याण साथ (*1544 – 1581 ई.*)</u>
    - अकबर का समकालीन था।
    - जमाबंदी प्रणाली शुरू की। इसी के तर्ज पर कैप्टन चिस्म ने छत्तीसगढ को छत्तीस गढों में विभाजित किया।
13. <u>लक्ष्मण साथ</u>
14. <u>तख्त सिंह</u>
    - तख्तपुर शहर बसाया था।
15. <u>राज सिंह</u>
    - गोपाल सिंह (कवि) के राज दरबार में रहता था।
    - रचना – खूब तमाशा
16. <u>सरदार सिंह</u>
17. <u>रघुनाथ सिंह</u>
    - अंतिम कलचुरी शासक
    - *1741* ई. में भोंसले सेनापति भास्कर ने आक्रमण कर छत्तीसगढ में कलचुरियों की शाखा को समाप्त किया।
18. <u>मोहन सिंह</u>
    - मराठों के अधीन अंतिम शासक

❖ <u>फणीनाग वंश (कवर्धा)</u>

- कवर्धा के फणी नाग वंश के संस्थापक अहिराज थे। *1089* (*11* वीं सदी) में गोपाल देव ने भोरमदेव मंदिर का निर्माण कराया था। भोरम देव का मंदिर नागर शैली में निर्मित है। भोरम देव एक आदिवासी देवता है।
- भोरमदेव के मंदिर को छत्तीसगढ का खजुराहो कहते हैं।

- रामचंद्र देव ने *1349* (*14* वीं सदी) में मडवा महल का निर्माण करवाया था। मडवा महल को दूल्हा देव भी कहते है। मडवा महल एक शिव मंदिर है जो विवाह का प्रतीक है। इसी मडवा मंदिर में रामचंद्र जी ने कलचुरी की राजकुमारी अंबिका देवी से विवाह किया था ।

❖ <u>सोमवंश (कांकेर)</u>

- कांकेर वंश के संस्थापक सिंहराज थे। इसके बाद व्याघराज ने शासन किया। इसके बाद वोपदेव ने शासन किया। वोपदेव के बाद का कर्णराज, सोमराज, कृष्ण राज ने शासन किया। सिहावा ताम्रपत्र, तहनाकपारा ताम्रपत्र और कांकेर शिलालेख से कांकेर के सोमवंश का वर्णन मिलता है।

❖ <u>छिद्रक नागवंश (बस्तर)</u>

- बस्तर में छिद्रकनाग वंश की स्थापना नृपतिभूषण ने की थी। इसकी राजधानी चक्रकोट थी। जिसे आज के समय में चित्रकूट के नाम से जानते है। छिद्रक नागवंशी राजा लोग भोगवातीपुरेश्वर की उपाधि धारण करते थे ।

❖ <u>प्रमुख शासक</u>

1. नृपतिभूषण
2. धारा वर्ष
3. मधुरंतक
4. सोमेश्वर देव
5. सोमेश्वर द्वितीय
6. जागदेव भूषण
7. हरीशचंद्र देव (अंतिम शासक)

❖ <u>काकतीय वंश (बस्तर)</u>

- इस वंश के संस्थापक अन्नमदेव थे। इनकी राजधानी मानध्यता हुआ करती थी। अन्नमदेव ने दंतेवाडा की दंतेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण कराया था। लोक गीतों में अन्नमदेव को छलकी वंश राज्य कहा गया है।

बस्तर का इतिहास

1. काकतीय वंश
   - शासनकाल – *1324 – 1961* ई. (बस्तर में सर्वाधिक लंबे समय तक शासन करने वाला वंश)
   - शासन क्षेत्र – बस्तर
   - संस्थापक – अन्नमदेव
   - अंतिम शासक – प्रवीरचन्द्र भंजदेव
   - राजधानी –
     1. मंधौता – अन्नमदेव
     2. चक्रकोट – पुरुषोत्तम देव
     3. बस्तर – दिगपाल देव
     4. जगदलपुर – दलपत देव

ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि

1309 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारत विजय अभियान के दौरान मलिक काफूर को साम्राज्य विस्तार हेतु वारंगल (तेलंगाना) भेजा । तभी यहाँ के काकतीय वंशीय शासक प्रत्यपरुद्र ने बिना युद्ध किए स्वयं कि मूर्ति को सोने की जंजीर मे बाँधकर कोहिनूर हीरे के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। कालांतर में गयासुद्दीन तुगलक ने *1321* ई. में आक्रमण किया और यहाँ शासित काकतीय वंश के सत्ता को कमजोर कर दिया। तभी अन्नमदेव ने इस क्षेत्र को छोडकर बस्तर क्षेत्र के शासित छिंद्रक नागवंश का अंत कर बस्तर क्षेत्र मे काकतीय वंश कि नींव रखी ।

काकतीय वंश

1. स्वतंत्र शासक – अन्नमदेव
   – भैरम देव
   – पुरुषोत्तम देव
   – प्रताप राजदेव
   – वीर सिंह देव
   – दिगपाल देव
   – राजपाल देव
   – दलपत देव

		– अजमेर सिंह
2.	मराठाधीन शासक	– दरियादेव
3.	आंग्ल मराठाधीन शासक	– महिपाल देव
		– भूपाल देव
4.	ब्रिटिश अधीन शासक	– भैरम देव
		– रुद्रप्रताप देव
		– प्रफुल्ल कुमारी देवी
		– प्रवीरचन्द्र भंजदेव

1. स्वतंत्र शासक

1. अन्नमदेव (*1324–1369* ई.)

- राजधानी – मंधौता (बस्तर)
- छत्तीसगढ में काकतीय वंश के संस्थापक (*1324* ईस्वी में)
- अन्नमदेव ने अपनी कुलदेवी की प्रतिमा दंतेवाडा जिले में शंखिनी – डंकिनी नदी के संगम स्थल पर ताराला ग्राम में दंतेश्वरी मंदिर का निर्माण करवाया।
- बस्तर के लोकगीतों में इसे चालकी वंश नाम से संबोधित किया गया है।

2. भैरमदेव (*1410–1468* ई.)

- इसकी पत्नी मेघई अरिचकेलिन आखेट विद्या में निपुण थी। जिसकी स्मृति में बस्तर में आज भी मेघी साडी प्रसिद्ध है।

3. पुरुषोत्तम देव (*1468–1534* ई.)

- राजधानी – मंधौता से चक्रकोट स्थानांतरित की।
- उपाधि – रथपति (पुरी के शासक द्वारा प्रदत)
- पूरी शासक ने *16* पहियों का रथ प्रदान किया।
- बस्तर में विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा एवं गोंचा पर्व का प्रारंभ इन्हीं के द्वारा किया गया।

4. प्रताप राजदेव (*1602–1625* ई.)

- इनके समय में गोलकुंडा के मोहम्मद कुली कुतुबशाह की सेना ने बस्तर पर आक्रमण किया। कुतुबशाह की सेना बस्तर की सेना से बुरी तरह पराजित हुई।

5. वीर सिंह देव (*1654–1680* ई.)

- इन्होंने राजपुर के दुर्ग का निर्माण करवाया।

6. दिगपाल देव (*1680–1709* ई.)

- इसने राजधानी चक्रकोट से बस्तर स्थानांतरित किया।

7. राजपाल देव (*1709–1721* ई.)

- इसने पौढ प्रताप चक्रवर्ती की उपाधि धारण की।
- ये मणिकेश्वरी देवी के उपासक थे।

8. दलपत देव (*1731–1774* ई.)

- राजधानी – जगदलपुर
- इनके शासनकाल में प्रथम भौंसला आक्रमण नील पंत ने किया, जो असफल रहा। परिणाम स्वरूप *1770* ईस्वी में राजधानी बस्तर से जगदलपुर स्थानांतरित की गई।
- दलपत देव ने अपने नाम से दलपत सागर तालाब झील का निर्माण कराया। वर्तमान में छत्तीसगढ का सबसे बडी झील दलपत सागर है।
- बंजारों का बस्तर में व्यापार और नमक सभ्यता का प्रचार – बंजारे वस्तु विनिमय व्यापार के द्वारा नमक के बदले जनजातियों से बहुमूल्य वनोपज प्राप्त करते थे और यहीं से बस्तर क्षेत्र वासियों का शोषण प्रारंभ हुआ।

9. अजमेर सिंह (*1774–1777* ई.)

- इन्हें बस्तर क्षेत्र में क्रांति का मसीहा कहा जाता है। अजमेर सिंह के नेतृत्व में बस्तर का प्रथम जनजाति विद्रोह हल्बा विद्रोह सन् *1774* में प्रारंभ हुआ। दरियादेव ने ब्रिटिश अधिकारी व मराठों के साथ कूटनीतिक षडयंत्र कर अजमेर पर आक्रमण किया। इस विद्रोह के काकतीय वंश का पतन मराठों के अधीन आ गया।

2. मराठाधीन शासक

❖ दरिया देव (*1777–1800* ई.)

- दरियादेव के षडयंत्र के फलस्वरूप अजमेर सिंह हल्बा आंदोलन में पराजित हुए।
- इन्होंने सत्ता हस्तांतरण हेतु जैपुर नरेश विक्रम देव व भौंसला शासक राजा बिंबाजी के प्रतिनिधि अनीराव के मध्य *6* अप्रैल *1778* ईस्वी को कोटपाडा की संधि की। इस संधि के तहत जैपुर (उडीसा) नरेश की कोटपाडा, चुकचुडा, पोडागढ और रायगढ का क्षेत्र मिला तथा मराठों को *59000* टकोली प्रतिवर्ष देने को राजी हुआ।

- दरिया देव के शासनकाल में ही बस्तर क्षेत्र छत्तीसगढ का अभिन्न अंग बना।
- कोठवाडा की संधि – 6 अप्रैल 1778 ई. को हुई ।
- राज्य का बस्तर क्षेत्र मराठा नियंत्रण में आ गया।
- काकतीय वंश ने इस समय मराठों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इनके शासनकाल में 1795 ई. में मिस्टर ब्लंट का छत्तीसगढ आगमन हुआ जिन्होंने कांकेर तक यात्रा की किंतु बस्तर में प्रवेश नहीं कर सके।
- दरिया देव के शासनकाल में 1795 ई. में भोपालपट्टनम का संघर्ष हुआ। (कारण – मिस्टर के आगमन के विरोध में)

3. आंग्ल मराठाधीन शासक

1. महिपाल देव (1800– 1842 ई.)

- इनके शासनकाल में सन् 1825 ईस्वी में गेंद सिंह के नेतृत्व में परलकोट का विद्रोह हुआ।
- महिपाल देव ने मराठों को टकोली नहीं चुकाया। जिसके कारण शासक व्यंकोजी ने सेनापति रामचंद्र नाथ को आक्रमण (1809) हेतु भेजा। इस युद्ध में महिपाल पराजित हुआ। हारने के बाद संधि हुई जिसमे टकोली न पटा पाने के कारण से सिहवा क्षेत्र दे दिया।

2. भूपाल देव (1842 – 1853 ईस्वी)

- मराठा शासकों ने नरबलि प्रथा के आधार पर भूपाल देव पर अभियोग लगाया।
- भूपाल देव के शासनकाल में दो प्रसिद्ध जनजाति विद्रोह हुए।
  1. तारापुर विद्रोह (1842)
  2. मेरिया विद्रोह (1842)

4. ब्रिटिश कालीन शासक

- जब लॉर्ड डलहौजी के द्वारा 13 मार्च 1854 ई. को हडप नीति के तहत नागपुर राज्य का ब्रिटिश साम्राज्य में लिया गया, तो नागपुर साम्राज्य के अधीन क्षेत्र विशेष के अधीन आ गया। परिणाम स्वरूप संपूर्ण छत्तीसगढ भी ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया और इस प्रकार बस्तर क्षेत्र प्रशासनिक व राजनैतिक रूप से अंग्रेजों के अधीन आ गया।

1. भैरम देव (1853– 1891 ई.)

- इसके शासनकाल में अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स इलियट का 1856 ई. में बस्तर आगमन हुआ।
- इनके शासनकाल में तीन प्रमुख जनजाति विद्रोह हुए।
  1. लिंगागिरी विद्रोह (1856)
  2. कोई विद्रोह (1859) – छत्तीसगढ का चिपको आंदोलन
  3. मुडिया विद्रोह (1876)

- रानी चोरिस – छत्तीसगढ़ की प्रथम विद्रोहिणी।
- इनका मूल नाम जुगराज कुँवर था।
- इन्होंने भैरमदेव के खिलाफ विद्रोह (1878-82) किया था।

2. रुद्रप्रताप देव (1891-1921 ई.)

- उपाधि – 'सेंट ऑफ जेरूसलम' ब्रिटिश साम्राज्य के द्वारा दी गई थी।
- जगदलपुर का नगर नियोजन कर इसे चौराहों का नगर बनाया।
- इसके शासनकाल में गुंडाधुर के नेतृत्व में 1910 ईस्वी में बस्तर का प्रसिद्ध भूमकाल विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- बस्तर में घोटीपोनी प्रथा (महिलाओं के क्रय-विक्रय से संबंधित) की शुरुआत हुई।

3. प्रफुल्ल कुमारी देवी (1921-1936 ई.)

- छत्तीसगढ़ की एकमात्र महिला शासिका।
- अपेंडिसाइटिस का ऑपरेशन कराने लंदन गई, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

4. प्रवीर चंद्र भंजदेव (1936-1961 ई.)

- अंतिम काकतीय शासक था ।
- इनके नाम पर छत्तीसगढ़ शासन द्वारा तीरंदाजी के क्षेत्र में पुरस्कार दिया जाता है।
- छत्तीसगढ़ के रियासतों का विलीनीकरण के समय बस्तर रियासत के शासक ने समझौते पर हस्ताक्षर किया था।